[१६]

अथान्त्येष्टिकर्मविधिं वक्ष्यामः

'अन्त्येष्टि' कर्म उस को कहते हैं कि जो शरीर के अन्त का संस्कार है, जिस के आगे उस शरीर के लिए कोई भी अन्य संस्कार नहीं है। इसी को नरमेध, पुरुषमेध, नरयाग, पुरुषयाग भी कहते हैं ।

भस्मान्तꣳ शरीरम् । —यजुः अ० ४० । मं० १५।।

निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधिः ॥ —मनु०

अर्थ—इस शरीर का संस्कार (भस्मान्तम्) अर्थात् भस्म करने पर्यन्त है ।।१।।

शरीर का आरम्भ ऋतुदान और अन्त में श्मशान अर्थात् मृतक कर्म है ।।२।।

(प्रश्न) गरुडपुराण आदि में दशगात्र, एकादशाह, द्वादशाह, सपिण्डी कर्म, मासिक, वार्षिक, गयाश्राद्ध आदि क्रिया लिखी हैं, क्या ये सब असत्य हैं ?

(उत्तर) हाँ, अवश्य मिथ्या हैं, क्योंकि वेदों में इन कर्मों का विधान नहीं है । इसलिए अकर्त्तव्य हैं और मृतक जीव का सम्बन्ध पूर्व सम्बन्धियों के साथ कुछ भी नहीं रहता, और न इन जीते हुए सम्बन्धियों का । वह जीव अपने कर्म के अनुसार जन्म पाता है ।

(प्रश्न) मरण के पीछे जीव कहाँ जाता है ?

(उत्तर) यमालय को ।

(प्रश्न) यमालय किस को कहते हैं ?

(उत्तर) वाय्वालय को ।

(प्रश्न) वाय्वालय किस को कहते हैं ?

(उत्तर) अन्तरिक्ष को, जो कि यह पोल है ।

(प्रश्न) क्या गरुडपुराण आदि में यमलोक लिखा है वह झूठा है ?

(उत्तर) अवश्य मिथ्या है ।

(प्रश्न) पुनः संसार क्यों मानता है ?

(उत्तर) वेद के अज्ञान और उपदेश के न होने से । जो यम की कथा लिख रक्खी है, वह सब मिथ्या है, क्योंकि **'यम'** इतने पदार्थों

का नाम है—

षळिद् यमा ऋषयो देवजा इति ॥१॥

—ऋ० म० १। सू० १६४ । मं० १५॥

शकेम वाजिनो यमम् ॥२॥ —ऋ० म० २। सू० ५ । मं० १॥

यमाय जुहुता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः ॥३॥

—ऋ० म० १०। सू० १४ । मं० १३॥

यमः सूयमानो विष्णुः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः ॥४॥

—यजु० अ० ८। मं० ५७॥

वाजिनं यमम् ॥५॥ —ऋ० म० ८। सू० २४ । मं० २२॥

यमं मातरिश्वानमाहुः ॥६॥ —ऋ० म० १। सू० १६४ । मं० ४६॥

अर्थ—यहां ऋतुओं का यम नाम ॥१॥

यहां परमेश्वर का नाम ॥२॥

यहां अग्नि का नाम ॥३॥

यहां वायु, विद्युत्, सूर्य के यम नाम हैं ॥४॥

यहां भी वेगवाला होने से वायु का नाम यम है ॥५॥

यहां परमेश्वर का नाम यम है ॥६॥

इत्यादि पदार्थों का नाम **'यम'** है । इसलिए पुराण आदि की सब कल्पना झूठी है ।

विधि—

संस्थिते भूमिभागं खानयेद् दक्षिणपूर्वस्यां दिशि दक्षिणापरस्यां वा ॥१॥

दक्षिणाप्रवणं प्राग्दक्षिणाप्रवणं वा प्रत्यग्दक्षिणाप्रवणमित्येके ॥२॥

यावानुद्बाहुकः पुरुषस्तावदायामम् ॥३॥

व्याममात्रं तिर्यक् ॥४॥

वितस्त्यर्वाक् ॥५॥

केशश्मश्रुलोमनखानीत्युक्तं पुरस्तात् ॥६॥

द्विगुल्फं बर्हिराज्यं च ॥७॥

दधन्यत्र सर्पिरानयन्त्येतत् पित्र्यं पृषदाज्यम् ॥८॥

अथैतां दिशमग्नीन् नयन्ति यज्ञपात्राणि च ॥९॥

अर्थ—जब कोई मर जावे तब यदि पुरुष हो तो पुरुष और स्त्री हो

तो स्त्रियां उस को स्नान करावें । चन्दनादि सुगन्धलेपन और नवीन वस्त्र धारण करावें । जितना उस के शरीर का भार हो उतना घृत यदि अधिक सामर्थ्य हो तो अधिक लेवें और जो महादरिद्र भिक्षुक हो कि जिस के पास कुछ भी नहीं है, उसे कोई श्रीमान् वा पञ्च बनके आध मन से कम घी न देवें, और श्रीमान् लोग शरीर के बराबर तोलके चन्दन, सेर भर घी में एक रत्ती कस्तूरी, एक मासा केसर, एक-एक मन घी के साथ सेर-सेर भर अगर-तगर और घृत में चन्दन का चूरा भी यथाशक्ति डाल कपूर, पलाश आदि के पूर्ण काष्ठ, शरीर के भार से दूनी सामग्री श्मशान में पहुंचावें । तत्पश्चात् मृतक को वहां श्मशान में ले जायें ।

यदि प्राचीन वेदी बनी हुई न हो तो नवीन वेदी भूमि में खोदे। वह श्मशान का स्थान बस्ती से दक्षिण तथा आग्नेय अथवा नैर्ऋत्य कोण में हो, वहां भूमि को खोदे । मृतक के पग दक्षिण, नैर्ऋत्य अथवा आग्नेय कोण में रहें । शिर उत्तर ईशान वा वायव्य कोण में रहे ।।१।।

मृतक के पग की ओर वेदी के तले में नीचा और शिर की ओर थोड़ा ऊंचा रहे ।।२।।

उस वेदी का परिमाण पुरुष खड़ा होकर ऊपर को हाथ उठावे उतनी लम्बी और दोनों हाथों को लम्बे उत्तर दक्षिण पार्श्व में करने से जितना परिमाण हो, अर्थात् मृतक के साढ़े तीन हाथ अथवा तीन हाथ ऊपर से चौड़ी होवे, और छाती के बराबर गहरी होवे ।।३।।

और नीचे आध हाथ अर्थात् एक बीता भर रहे [।।४।।]

उस वेदी में थोड़ा-थोड़ा जल छिटकावे । यदि गोमय उपस्थित हो तो लेपन भी करदे । उस में नीचे से आधी वेदी तक लकड़ियाँ चिने, जैसे कि भित्ती में ईंटे चिनी जाती हैं, अर्थात् बराबर जमाकर लकड़ियाँ धरे । लकड़ियों के बीच में थोड़ा-थोड़ा कपूर थोड़ी-थोड़ी दूर पर रक्खे । उस के ऊपर मध्य में मृतक को रक्खे, अर्थात् चारों ओर वेदी बराबर खाली रहे । और पश्चात् चारों ओर और ऊपर चन्दन तथा पलाश आदि के काष्ठ बराबर चिने । वेदी से ऊपर एक बीता भर लकड़ियाँ चिने ।

जब तक यह क्रिया होवे, तब तक अलग चूल्हा बना अग्नि जला घी तपा और छानकर पात्रों में रक्खे । उसमें कस्तूरी आदि सब पदार्थ मिलावे । लम्बी-लम्बी लकड़ियों में चार चमसों को, चाहे वे लकड़ी के हों वा चांदी सोने के अथवा लोहे के हों, जिस चमसा में एक छटांकभर से अधिक और आधी छटांक भर से न्यून घृत न आवे, खूब दृढ़ बन्धनों से डण्डों के साथ बांधे । पश्चात् घृत का दीपक करके कपूर में लगाकर शिर से आरम्भ कर पादपर्यन्त मध्य-मध्य में अग्नि-

प्रवेश करावे । अग्नि-प्रवेश कराके-

ओमग्नये स्वाहा ॥१॥
ओं सोमाय स्वाहा ॥२॥
ओं लोकाय स्वाहा ॥३॥
ओमनुमतये स्वाहा ॥४॥
ओं स्वर्गाय लोकाय स्वाहा ॥५॥

इन ५ पांच मन्त्रों से आहुतियां देके अग्नि को प्रदीप्त होने देवे। तत्पश्चात् ४ चार मनुष्य पृथक्-पृथक् खड़े रहकर वेदों के मन्त्रों से आहुति देते जायें जहां 'स्वाहा' आवे वहां आहुति छोड़ देवें ।

अथ वेदमन्त्राः

सूर्यं॑ चक्षु॒र्गच्छतु॒ वात॑मा॒त्मा द्यां च॑ गच्छ पृथि॒वीं च॒ धर्म॑णा ।
अ॒पो वा॑ गच्छ॒ यदि॒ तत्र॑ ते हि॒तमोष॑धीषु॒ प्रति॑ तिष्ठा॒ शरी॒रैः॒ स्वाहा॑ ॥१॥
अ॒जो भा॒गस्तप॑सा॒ तं त॑पस्व॒ तं ते॑ शो॒चिस्त॑पतु॒ तं ते॑ अ॒र्चिः ।
यास्ते॑ शि॒वास्त॒न्वो॑ जातवेद॒स्ताभि॑र्वहैनं सु॒कृता॑मु लो॒कं स्वाहा॑ ॥२॥
अव॑सृज॒ पुन॑रग्ने पि॒तृभ्यो॒ यस्त॒ आहु॑त॒श्चर॑ति स्व॒धाभिः॑ ।
आयु॒र्वसा॑न॒ उप॑वेतु॒ शेषः॑ सं ग॑च्छतां त॒न्वा॑ जातवेदः॒ स्वाहा॑ ॥३॥
अ॒ग्नेर्वर्म॒ परि॒ गोभि॑र्व्ययस्व॒ संप्रो॑र्णुष्व॒ पीव॑सा॒ मेद॑सा च ।
नेत्त्वा॑ धृ॒ष्णुर्ह॑र॑सा॒ जर्ह॑षाणो दधृ॒ग्वि॑ध॒क्ष्यन् पर्य॑ङ्ङ्या॒ते॒ स्वाहा॑ ॥४॥
यं त्वम॑ग्ने स॒मद॑ह॒स्तमु॒ निर्वा॑पया॒ पुनः॑ ।
कि॒याम्ब्व॒त्र॑ रोहतु पाकदू॒र्वा व्य॑ल्कशा॒ स्वाहा॑ ॥५॥

—ऋ० म० १० । सू० १६ । मं० ३-५, ७, १३ ॥

पुरे॑यि॒वांसं॑ प्र॒वतो॑ म॒हीरनु॒ ब॒हुभ्यः॒ पन्था॑मनुपस्पशा॒नम् ।
वै॒व॒स्व॒तं स॒ङ्ग॑मनं॒ जना॑नां य॒मं राजा॑नं हु॒विषा॑ दुवस्य॒ स्वाहा॑ ॥६॥
य॒मो नो॑ गा॒तुं प्र॑थ॒मो वि॑वेद॒ नैषा गव्यू॑ति॒रप॑भर्त॒वा उ॑ ।
यत्रा॑ नः॒ पूर्वे॑ पि॒तरः॑ परे॒युरे॒ना ज॑ज्ञा॒नाः प॒थ्या॒३॑ अनु॒ स्वाः॒ स्वाहा॑ ॥७॥
मात॑ली क॒व्यैर्य॒मो अङ्गि॑रोभि॒र्बृह॒स्पति॒र्ऋक्व॑भिर्वावृधा॒नः ।
याँश्च॑ दे॒वा वा॑वृ॒धुर्ये च॑ दे॒वान्त्स्वाहा॒न्ये स्व॒धया॒न्ये म॑दन्ति॒ स्वाहा॑ ॥८॥
इ॒मं य॑म प्रस्त॒रमा हि सीदाङ्गि॑रोभिः॒ पि॒तृभि॑ः संविदा॒नः ।
आ त्वा॒ मन्त्राः॑ कविश॒स्ता व॑हन्त्वे॒ना रा॑जन्ह॒विषा॑ मादयस्व स्वाहा॑ ॥९॥

अङ्गिरोभिरा गहि यज्ञियेभिर्यम वैरूपैरिह मादयस्व ।
विवस्वन्तं हुवे यः पिता तेऽस्मिन्यज्ञे बर्हिष्या निषद्य स्वाहा ॥१०॥
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिर्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः ।
उभा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवं स्वाहा ॥११॥
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूर्तेन परमे व्योमन् ।
हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चाः स्वाहा ॥१२॥
अपेत वीत वि च सर्पतातोऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन् ।
अहोभिरद्भिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै स्वाहा ॥१३॥
यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः ।
यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः स्वाहा ॥१४॥
यमाय घृतवद्धविर्जुहोत प्र च तिष्ठत ।
सं नो देवेष्वा यमद् दीर्घमायुः प्र जीवसे स्वाहा ॥१५॥
यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन ।
इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः स्वाहा ॥१६॥

—ऋ० मं० १० । सू० १४ । मं० १-५, ७-९, १३-१५॥

कृष्णः श्वेतोऽरुषो यामो अस्य ब्रध्न ऋज्र उत शोणो यशस्वान् ।
हिरण्यरूपं जनिता जजान स्वाहा ॥१७॥

—ऋ० म० १० । सू० २० । मं० ९॥

इन ऋग्वेद के मन्त्रों से चारों जने सत्रह-सत्रह आज्याहुति देकर, निम्नलिखित मन्त्रों से उसी प्रकार आहुति देवें—

प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः स्वाहा ॥१॥

पृथिव्यै स्वाहा ॥२॥	**अग्नये स्वाहा ॥३॥**
अन्तरिक्षाय स्वाहा ॥४॥	**वायवे स्वाहा ॥५॥**
दिवे स्वाहा ॥६॥	**सूर्याय स्वाहा ॥७॥**
दिग्भ्यः स्वाहा ॥८॥	**चन्द्राय स्वाहा ॥९॥**
नक्षत्रेभ्यः स्वाहा ॥१०॥	**अद्भ्यः स्वाहा ॥११॥**
वरुणाय स्वाहा ॥१२॥	**नाभ्यै स्वाहा ॥१३॥**
पूताय स्वाहा ॥१४॥	**वाचे स्वाहा ॥१५॥**
प्राणाय स्वाहा ॥१६॥	**प्राणाय स्वाहा ॥१७॥**
चक्षुषे स्वाहा ॥१८॥	**चक्षुषे स्वाहा ॥१९॥**

श्रोत्रा॑य॒ स्वाहा॑ ॥२०॥ श्रोत्रा॑य॒ स्वाहा॑ ॥२१॥
लोम॑भ्य॒: स्वाहा॑ ॥२२॥ लोम॑भ्य॒: स्वाहा॑ ॥२३॥
त्व॒चे स्वाहा॑ ॥२४॥ त्व॒चे स्वाहा॑ ॥२५॥
लोहि॑ताय॒ स्वाहा॑ ॥२६॥ लोहि॑ताय॒ स्वाहा॑ ॥२७॥
मेदो॑भ्य॒: स्वाहा॑ ॥२८॥ मेदो॑भ्य॒: स्वाहा॑ ॥२९॥
मा॒ꣳसेभ्य॒: स्वाहा॑ ॥३०॥ मा॒ꣳसेभ्य॒: स्वाहा॑ ॥३१॥
स्नाव॑भ्य॒: स्वाहा॑ ॥३२॥ स्नाव॑भ्य॒: स्वाहा॑ ॥३३॥
अ॒स्थभ्य॒: स्वाहा॑ ॥३४॥ अ॒स्थभ्य॒: स्वाहा॑ ॥३५॥
म॒ज्जभ्य॒: स्वाहा॑ ॥३६॥ म॒ज्जभ्य॒: स्वाहा॑ ॥३७॥
रेत॑से स्वाहा॑ ॥३८॥ पा॒यवे॒ स्वाहा॑ ॥३९॥
आ॒या॒साय॒ स्वाहा॑ ॥४०॥ प्रा॒या॒साय॒ स्वाहा॑ ॥४१॥
सं॒या॒साय॒ स्वाहा॑ ॥४२॥ वि॒या॒साय॒ स्वाहा॑ ॥४३॥
उ॒द्या॒साय॒ स्वाहा॑ ॥४४॥ शु॒चे स्वाहा॑ ॥४५॥
शोच॑ते॒ स्वाहा॑ ॥४६॥ शोच॑मानाय॒ स्वाहा॑ ॥४७॥
शोका॑य॒ स्वाहा॑ ॥४८॥ तप॑से॒ स्वाहा॑ ॥४९॥
तप्य॑ते॒ स्वाहा॑ ॥५०॥ तप्य॑मानाय॒ स्वाहा॑ ॥५१॥
त॒प्ताय॒ स्वाहा॑ ॥५२॥ घ॒र्माय॒ स्वाहा॑ ॥५३॥
निष्कृ॑त्यै॒ स्वाहा॑ ॥५४॥ प्राय॑श्चित्यै॒ स्वाहा॑ ॥५५॥
भे॒ष॒जाय॒ स्वाहा॑ ॥५६॥ य॒माय॒ स्वाहा॑ ॥५७॥
अ॒न्त॑काय॒ स्वाहा॑ ॥५८॥ मृ॒त्यवे॒ स्वाहा॑ ॥५९॥
ब्रह्म॑णे॒ स्वाहा॑ ॥६०॥ ब्र॒ह्म॒ह॒त्यायै॒ स्वाहा॑ ॥६१॥
विश्वे॑भ्यो दे॒वेभ्य॒: स्वाहा॑ ॥६२॥
द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒ꣳ स्वाहा॑ ॥६३॥ —यजुः० अ० ३९ ॥

इन ६३ तिरसठ मन्त्रों से ६३ तिरसठ आहुति पृथक्-पृथक् देके, निम्नलिखित मन्त्रों से आहुति देवें—

सूर्यं॑ चक्षु॒षा॒ गच्छ॒ वात॑मा॒त्मना॒ दिवं॑ च॒ गच्छ॑ पृथि॒वीं च॒ धर्म॑भिः ।
अ॒पो वा॒ गच्छ॒ यदि॒ तत्र॑ ते हि॒तमोष॑धीषु॒ प्रति॑ तिष्ठा॒ शरी॑रैः॒ स्वाहा॑ ॥१॥

सोम॒ एके॑भ्यः पवते घृ॒तमेक॒ उपा॑सते ।
येभ्यो॒ मधु॒ प्र॒धाव॑ति॒ ताꣳश्चि॑दे॒वापि॑ गच्छता॒त् स्वाहा॑ ॥२॥
ये चि॒त्पूर्व॑ ऋ॒तसा॑ता ऋ॒तजा॑ता ऋता॒वृधः॑ ।
ऋषी॑ꣳस्तपस्वतो यम तपो॒जाँ अपि॑ गच्छता॒त् स्वाहा॑ ॥३॥

तपसा ये अनाधृष्यास्तपसा ये स्वर्ययुः ।
तपो ये चक्रिरे महस्तांश्चिदेवापि गच्छतात् स्वाहा ॥४॥
ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरासो ये ततनुत्यजः ।
ये वा सहस्त्रदक्षिणास्तांश्चिदेवापि गच्छतात् स्वाहा ॥५॥
स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी ।
यच्छास्मै शर्म सप्रथाः स्वाहा ॥६॥
अपेमं जीवा अरुधन् गृहेभ्यस्तं निर्वहत परि ग्रामादितः ।
मृत्युर्यमस्यासीद्दूतः प्रचेता असून् पितृभ्यो गमयां चकार स्वाहा ॥७॥
यमः परोऽवरो विवस्वांस्ततः परं नाति पश्यामि किं चन ।
यमे अध्वरो अधि मे निविष्टो भुवो विवस्वानन्वाततान स्वाहा ॥८॥
अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वा सवर्णामदधुर्विवस्वते ।
उताश्विनावभरद्यत्तदासीदजहादु द्वा मिथुना सरण्यूः स्वाहा ॥९॥
इमौ युनज्मि ते बह्वी असुनीताय वोढवे ।
ताभ्यां यमस्य सादनं समितीश्चाव गच्छतात् स्वाहा ॥१०॥

—अथर्व० का० १८ । सू० २॥

इन दश मन्त्रों से दश आहुति देकर—

अग्नये रयिमते स्वाहा ॥१॥
पुरुषस्य सयावर्यपेदघानि मृज्महे ।
यथा नो अत्र नापरः पुरा जरस आयति स्वाहा ॥२॥
य एतस्य पथो गोप्तारस्तेभ्यः स्वाहा ॥३॥
य एतस्य पथो रक्षितारस्तेभ्यः स्वाहा ॥४॥
य एतस्य पथोऽभिरक्षितारस्तेभ्यः स्वाहा ॥५॥
ख्यात्रे स्वाहा ॥६॥
अपाख्यात्रे स्वाहा ॥७॥
अभिलालपते स्वाहा ॥८॥
अपलालपते स्वाहा ॥९॥
अग्नये कर्मकृते स्वाहा ॥१०॥
यमत्र नाधीमस्तस्मै स्वाहा ॥११॥
अग्नये वैश्वानराय सुवर्गाय लोकाय स्वाहा ॥१२॥

आयातु देवः सुमनाभिरूतिभिर्यमो ह वेह प्रयताभिरक्ता।
आसीदताꣳसुप्रयते ह बर्हिष्यूर्जाय जात्यै मम शत्रुहत्यै स्वाहा ॥१३॥
योऽस्य कौष्ठ्य जगतः पार्थिवस्यैक इद्वशी ।
यमं भङ्ग्यश्रवो गाय यो राजाऽनपरोध्यः स्वाहा ॥१४॥
यमं गाय भङ्ग्यश्रवो यो राजाऽनपरोध्यः ।
येनाऽऽपो नद्यो धन्वानि येन द्यौः पृथिवी दृढा स्वाहा ॥१५॥
हिरण्यकक्ष्यान्त्सुधुरान् हिरण्याक्षानयःशफान् ।
अश्वाननः शतो दानं यमो राजाभितिष्ठति स्वाहा ॥१६॥
यमो दाधार पृथिवीं यमो विश्वमिदं जगत् ।
यमाय सर्वमित्तस्थे यत् प्राणद्वायुरक्षितं स्वाहा ॥१७॥
यथा पञ्च यथा षड् यथा पञ्चदशर्षयः ।
यमं यो विद्यात् स ब्रूयाद्यथैक ऋषिर्विजानते स्वाहा ॥१८॥
त्रिकद्रुकेभिः पतति षडुर्वीरेकमिद् बृहत् ।
गायत्री त्रिष्टुप् छन्दाꣳसि सर्वा ता यम आहिता स्वाहा ॥१९॥
अहरहर्नयमानो गामश्वं पुरुषं जगत् ।
वैवस्वतो न तृप्यति पञ्चभिर्मानवैर्यमः स्वाहा॥२०॥
वैवस्वते विविच्यन्ते यमे राजनि ते जनाः ।
ये चेह सत्येनेच्छन्ते य उ चानृतवादिनः स्वाहा ॥२१॥
ते राजन्निह विविच्यन्तेऽथा यन्ति त्वामुप ।
देवांश्च ये नमस्यन्ति ब्राह्मणांश्चापचित्यति स्वाहा ॥२२॥
यस्मिन् वृक्षे सुपलाशे देवैः संपिबते यमः ।
अत्रा नो विश्पतिः पिता पुराणा अनुवेनति स्वाहा ॥२३॥
उत्ते तभ्नोमि पृथिवीं त्वत्परीमं लोक निदधन्मो अहꣳरिषम्।
एताथ्ꣳ स्थूणां पितरो धारयन्तु तेऽत्रा यमः सादनात् ते मिनोतु स्वाहा॥२४
यथाऽहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथर्त्तव ऋतुभिर्यन्ति क्लृप्ताः ।
यथा नः पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूथ्ꣳषि कल्पयैषाथ्ꣳ स्वाहा ॥२५॥
न हि ते अग्ने तनुवै क्रूरं चकार मर्त्यः ।
कपिर्बभस्ति तेजनं पुनर्जरायुर्गौरिव ।
अप नः शोशुचदघमग्ने शुशुध्या रयिम् ।
अप नः शोशुचदघं मृत्यवे स्वाहा ॥२६॥

—तैत्ति० प्रपा० ६। अनु० १।१०॥

इन २६ छब्बीस आहुतियों को करके, ये सब **(ओम् अग्नये स्वाहा) इस मन्त्र से लेके (मृत्यवे स्वाहा) तक १२१ एक सौ इक्कीस आहुति** हुईं, अर्थात् ४ चार जनों की मिलके ४८४ चार सौ चौरासी और जो दो जने आहुति देवें तो २४२ दो सौ बयालीस । यदि घृत विशेष हो तो पुनः इन्हीं १२१ एक सौ इक्कीस मन्त्रों से आहुति देते जायें, यावत् शरीर भस्म न हो जाय तावत् देवें ।

जब शरीर भस्म हो जावे, पुनः सब जने **वस्त्र प्रक्षालन स्नान करके जिस के घर में मृत्यु हुआ हो उस के घर की मार्जन, लेपन, प्रक्षालनादि से शुद्धि करके, पृष्ठ ७-११ में लिखे प्रमाणे स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण का पाठ और पृष्ठ ४-६ में लिखे प्रमाणे ईश्वरोपासना करके, इन्हीं स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण के मन्त्रों से, जहां अङ्क, अर्थात् मन्त्र पूरा हो, वहां 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण करके सुगन्ध्यादि मिले हुए घृत की आहुति घर में देवें** कि जिस से मृतक का वायु घर से निकल जाय और शुद्ध वायु घर में प्रवेश करे और सब का चित्त प्रसन्न रहे । **यदि उस दिन रात्रि हो जाये तो थोड़ी सी [आहुति] देकर, दूसरे दिन प्रातःकाल उसी प्रकार स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण के मन्त्रों से आहुति देवें ।**

तत्पश्चात् जब तीसरा दिन हो तब मृतक का कोई सम्बन्धी श्मशान में जाकर चिता से अस्थि उठाके उस श्मशान भूमि में कहीं पृथक् रख देवे । **बस, इसके आगे मृतक के लिये कुछ भी कर्म कर्तव्य नहीं है,** क्योंकि पूर्व **(भस्मान्तꣳ शरीरम्)** यजुर्वेद के मन्त्र के प्रमाण से स्पष्ट हो चुका है कि दाहकर्म और अस्थिसञ्चयन से पृथक् मृतक के लिए दूसरा कोई भी कर्म-कर्त्तव्य नहीं है । हां, यदि वह सम्पन्न हो तो अपने जीते जी, वा मरे पीछे उस के सम्बन्धी वेदविद्या वेदोक्त धर्म का प्रचार, अनाथपालन, वेदोक्त धर्मोपदेश की प्रवृत्ति के लिए चाहे जितना धन प्रदान करें, बहुत अच्छी बात है ।।

इति मृतक-संस्कारविधिः समाप्तः ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्याणां श्रीयुतविरजानन्द-सरस्वतीस्वामिनां महाविदुषां शिष्यस्य वेदविहिताचारधर्म-निरूपकस्य श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिनः कृतौ संस्कारविधिर्ग्रन्थः पूर्तिमगात् ॥१॥

❑❑❑